शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,

Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

ज्ञानार्जन का सेतु मातृभाषा

जितेन्द्र कौर
विभाग- हिन्दी प्रवक्ता, सी0एम0के0 नेशनल पी0जी0 गर्ल्स कॉलेज़, सिरसा, हरियाणा ।
Email : jitendrashodhi97@gmail.com

सारांश

मनोविज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि बालक गर्भावस्था में ही ज्ञान अर्जन करना शुरू कर देता है और भाषा का विकास गर्भकाल से ही आरम्भ हो जाता है और बालक माता के संस्कार गर्भकाल से ही ग्रहण करना आरम्भ कर देता है। इसलिए शिक्षा शास्त्री मां की भाषा को महत्त्व प्रदान करते हैं और ज्ञार्नाजन का सशक्त माध्यम भाषा है। भाषा ही परिवेश से जोड़ते हुए बालक को भावी जीवन के लिए तैयार करती है। वहीं से बालक राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ज्ञार्नाजन करता है।

प्रस्तावना

मातृभाषा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए भारतीय वैज्ञानिक सी0वी0 श्रीनाथ शास्त्री के अनुभव के अनुसार अंग्रेजी माध्यम से इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करने वाले की तुलना में भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़े छात्र, अधिक वैज्ञानिक अनुसंधान करते हैं। राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र की डाक्टर नंदनी सिंह ही अध्ययन के अनुसार अंग्रेजी की पढ़ाई से मस्तिष्क का एक ही हिस्सा सक्रिय होता है जबकि हिन्दी की पढ़ाई से मस्तिष्क के दोनों भाग सक्रिय होते हैं। सर आईजेक पिटमैन ने कहा कि संसार में यदि कोई सर्वाण पूर्ण लिपि है तो वह देवनागरी है। विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़ाई, अनुसंधान, पुस्तकें आदि आधुनिकता के भी विरूद्ध है, क्योंकि आधुनिक ज्ञान, समाज के सभी वर्गों तक अपनी भाषा में ही पहुँचाया जा सकता है, लेकिन दूसरी तरफ आज दुनिया के लगभग 170 देशों में किसी न किसी रूप में हिन्दी पढ़ाई जाती है। विश्व के 32 से अधिक देशों के विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जा रही है । इंग्लैंड के सेंट जेम्स विद्यालय में 6 वर्ष तक संस्कृत पढना अनिवार्य है। पहले भारत में भी जहां कहीं हिन्दी का विरोध था या जहां हिन्दी का प्रयोग कम माना जाता था जैसे की तमिलनाडु, मिजोरम, नागालैण्ड आदि, अब इन राज्यों में भी हिन्दी बोलने–सिखाने हेतु हिन्दी स्पीकिंग क्लासेस बडी मात्रा में प्रारंभ हुए हैं। अरूणाचल राज्य की एक प्रकार से राजभाषा हिन्दी है तथा नागालैण्ड राज्य ने द्वितीय राजभाषा करके हिन्दी को मान्यता दी। दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा आदि की हिंदी परीक्षाओं में भारी संख्या में लोग सहभागी हो रहे हैं। वास्तव में भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी से चुनौती नहीं है, बल्कि अंग्रेजी मानसिकता वाले भारतीयों से है। हमें हिन्दी की या भारत की किसी भी भाषा की वकालत नहीं करनी है, लेकिन राष्ट्रहित की दृष्टि जो वैज्ञानिक एवं तर्क सम्मत है उसकी वकालत अवश्य करनी है।

मातृभाषा सीखने, समझने व ज्ञान की प्राप्ति में सरल है पूर्व राष्ट्रपति डॉ अब्दुल कलाम ने स्वयं के अनुभव के आधार पर कहा है कि ''मैं अच्छा वैज्ञानिक इसलिए बना, क्योंकि मैंने गणित और विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की है'' । अंग्रेजी भाषा माध्यम में पढ़ाई में अतिरिक्त श्रम करना पडता है। मैडिकल या इंजीनियरिंग पढ़ने हेतु पहले अंग्रेजी सीखनी पढ़ती है बाद में उन विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। पंडित मदन मोहन मालवीय अंग्रेजी के ज्ञाता थे। उनकी अंग्रेजी सुनने अंग्रेज विद्वान भी आते थे लेकिन उन्होने कहा था कि मैं 60 वर्ष से अंग्रेजी का प्रयोग करता आ रहा हूँ। परन्तु बोलने में हिन्दी जितनी सहजता अंग्रेजी में नहीं आ पाती।

इसी प्रकार विश्व कवि **रविन्द्र नाथ ठाकुर** ने कहा है– ''यदि विज्ञान को जन–सुलभ बनाना है तो मातृभाषा के माध्यम से विज्ञान की शिक्षा दी जानी चाहिए।''

महात्मा गांधी का कथन ''विदेशी माध्यम ने बच्चों की तंत्रिकाओं पर भार डाला है उन्हे रटटू बनाया है, वह सृजन के लायक नहीं रहे। विदेशी भाषा ने देशी भाषाओं के विकास को बाधित किया है।

भारत के ख्याति प्राप्त अधिकार अधिकतर वैज्ञानिकों ने अपनी शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की है। जिसमें प्रमुख रूप से जगदीश चन्द्र बसु, श्रीनिवास रामानुज, डॉ अब्दुल कलाम आदि शिक्षा के विभिन्न आयोगों एंव देश के महापुरूषों ने भी मातृभाषा में शिक्षा होनी चाहिए, ऐसे सुझाव दिये है।

महात्मा गांधी के अनुसार ''बच्चों के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी की आवश्यक है जितना शारीरिक विकास के लिए मां का दूध''

अंग्रेजी भाषा बनाम मातृभाषा

पिछले 175 वर्षो की अंग्रेजी शिक्षा से देश को काफी नुकसान हो रहा है। बालकों के मस्तिष्क पर अंग्रेजी के कारण बोझ बढ़ा है। यह एक प्रकार से उन पर अत्याचार है इस कारण से उनका विकास ठीक ढंग से नही हो पा रहा है। वे न तो अंग्रेजी सीख पाते है और ना ही मातृभाषा। हमारे यहां अंग्रेजी और गणित में सबसे अधिक बच्चे विफल होते है। विदेशी भाषा में जानकारी या कुछ मात्रा में ज्ञान प्राप्त हो सकता है लेकिन ज्ञान सृजन नहीं हो सकता। इसी प्रकार शोध कार्य में भी वैश्विक स्तर पर हम पिछड़ रहे है। अपने देश में शोध कार्य और साहित्य सृजन अधिकतर अंग्रेजी में होने से अपने देश के लोगों के बदले विदेश के लोग उनका ज्यादा लाभ उठा रहे है हमारे देश में विद्वान विदेशों पर निर्भन हो रहे है। आज देश में अंग्रेजी उच्च वर्ग की भाषा है और भारतीय भाषाएं सामान्य लोगों की है जिसके कारण देश में दो वर्ग खड़े हो गये है अन्य देश अपनी अपनी भाषा को महत्व दे रहे है लेकिन एक हम है कि अंग्रेजी की गुलामी ढ़ोते चले आ रहे है। यह कहना उचित लगता है कि अंग्रेजी शोषण की भाषा बन गई है।

मातृभाषा व संस्कार

भाषा संस्कृति और संस्कारों की संवाहिका होती है। भाषा के पतन से संस्कृति व संस्कारों का भी पतन हो रहा है भाषा बदलने से मूल्य बदल जाते है। भाषा संस्कृति का अधिष्ठान है। उसी प्रकार सन 1362 तक ब्रिटेन में फ्रांसीसी का स्थान था। फिनलेन्ड में 100

वर्ष पूर्व स्वीडिश भाषा चलती थी, राशिया में जार के जमाने में फ्रांसीसी भाषा का दबदबा था। इन सभी देशों में वहां की जनता एंव शासको की इच्छा शक्ति के कारण, आज वहां अपनी भाषा में सारा कार्य हो रहा है आवश्यकता है कि अपने देश की जनता में इस प्रकार की इच्छा शक्ति जागृत करने की। इसकी शुरूआत स्वयं से करनी पड़ेगी। हमें मातृभाषा को महत्व देना होगा।

संस्कृति और मातृभाषा

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है, जो समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने–पीने, बोलने, नृत्य, गायन साहित्य, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है। संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा की धातु 'कृ' (करना) से बना है। इस धातु से तीन शब्द बनते है 'प्रकृति' (मूल स्थिति), 'संस्कृति' (परिष्कृत स्थिति) और 'विकृति' (अवनति स्थिति) अब 'प्रकृत' या कच्चा माल परिष्कृत किया जाता है तो यह संस्कृत हो जाता है और जब यह बिगड़ जाता है तो 'विकृत' हो जाता है । अंग्रजी में संस्कृति के लिए 'कल्चर' शब्द का प्रयोग किया जाता है जो लेटिन भाषा के 'कल्ट' से लिया गया है जिसका अर्थ है कि विकसित करना या परिष्कृत करना। संक्षेप में किसी वस्तु को यहाँ तक संस्कारित और परिष्कृत करना कि इसका अंतिम उत्पाद हमारी प्रंशसा और सम्मान प्राप्त कर सके। यह ठीक उसी तरह है जैसे संस्कृत भाषा का शब्द 'संस्कृति'।

मनुष्य स्वभावत प्रगतिशील प्राणी है। यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरंतर सुधारता और उन्नत करता रहता है। ऐसी प्रत्येक जीवन –पद्वति, रीति रिवाज , रहन–सहन आचार–विचार नवीन अनुसन्धान और आविष्कार, जिससे मनुष्य पशुओं और जंगलियों के दर्जे से ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है सभ्यता और संस्कृति का अंग है। सभ्यता से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है जबकि संस्कृति से मानसिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है।

मातृभाषा व सांस्कृतिक आदान–प्रदान

संस्कृति जीवन की विधि है जिसके आधार पर हम सोचते है और कार्य करते है इसमें वे अमूर्त/अभौतिक भाव और विचार भी सम्मिलित है जो हमने एक परिवार और समाज के सदस्य होने के नाते उत्तराधिकार में प्राप्त करते है एक सामाजिक वर्ग के सदस्य के रूप में मानवों की सभी उपलब्धियों उसकी संस्कृति से प्रेरित कही जा सकती है कला, संगीत, साहित्य, वास्तुविज्ञान, शिल्प कला, दर्शन, धर्म और विज्ञान सभी संस्कृति के प्रकट पक्ष हैं। तथापि संस्कृति में रीतिरिवाज, परम्पराएं, पर्व, जीने के तरीके और जीवन के विभिन्न पक्षों पर व्यक्ति विशेष का अपना दृष्टिकोण भी सम्मिलित है।

इस प्रकार संस्कृति मानव जनित मानसिक पर्यावरण से सम्बन्ध रखता है संस्कृति का मूल केन्द्र बिन्दु उन सूक्ष्म विचारों में निहित है जो एक समूह में ऐतिहासिक रूप से उनसे सम्बद्ध मूल्यों सहित विवेचित होते रहे है। संस्कृति किसी समाज के वे सूक्ष्म संस्कार है जिनके माध्यम से लोग परस्पर सम्प्रेषण करते है विचार करते है और जीवन के विषय में अपनी अभिवृतियों और ज्ञान को दिशा देते है। सच कहे तो किसी भी देश के लोग अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परम्पराओं

के द्वारा ही पहचाने जाते है।

मातृभाषा व संस्कृति का संबंध

संस्कृति परम्पराएं ही भाषा की विषय वस्तु बनकर ज्ञानार्जन का माध्यम बनती है। मानव के संप्रत्यय संस्कृति पर ही अधारित है।

मुझे स्वयं को पुष्कर मेले में जाने का कई बार अवसर प्राप्त हुआ। वहां पर विदेशी पर्यटक आकर भारतीय संस्कृति को अपनाते हुए अपनी संस्कृति का आदान प्रदान करते है जिसमें अंग्रेज पर्यटक भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के बारे में ज्ञानार्जन कर रहे है जो कि भारतीय अनपढ़ कालबे लिया औरतें मातृभाषा में ही बोलकर अभिव्यक्ति करती हैं जिसकों विदेशी पर्यटक ज्यों का त्यों ग्रहण कर अभिव्यक्ति करते है। निश्चित तौर पर वही सांस्कृतिक अभिव्यक्ति मातृभाषा से होती है।

डॉ० फूल सिंह लुहानी के अनुसार– ''मातृभाषा का विकास संस्कृति से जुडा हुआ है – ज्यों ज्यों संस्कृति में परिवर्तन आता है मातृभाषा उसे अपने रूप में स्वीकार करती है उसे ग्रहण कर निश्चित रूप देती है और वही संस्कृति मातृभाषा के माध्यम से राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञार्नाजन का माध्यम बनती है।''

सांस्कृतिक मूल्यों का संचय और मातृभाषा

संस्कृति अपने मूल्यों व आदर्शो को निरन्तर संचित करती रहती हैं और उनकी अभिव्यक्ति व प्रसार का माध्यम मातृभाषा है जो अपने परिवेश से यात्रा करते हुए राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य का निर्माण करती है।

संस्कृति की वाहक मातृभाषा

मातृभाषा संस्कृति की वाहक है । नया सामाजिक व संस्कृतिक परिवर्तन मातृभाषा के माध्यम से जन जन तक पहुँचाती है और मातृभाषा सांस्कृतिक आदान प्रदान में सहायक बनती है।

मातृभाषा और ग्रहयता

मातृभाषा हर भाव, विचार, मूल्य व आदर्श को ग्रहण करने की असीम क्षमता रखती है। यही असीम क्षमता उसे जीवंतता प्रदान करती है जो फिर संस्कृति से अपनी विषय वस्तु ग्रहण कर उसे असीम क्षेत्रों तक पहुँचाती है और ग्रहण करती है। जो दूर दराज तक सीमाओं को लांघते हुए ज्ञानार्जन में सहायक बनती है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहा जाए की मातृभाषा संस्कृति ज्ञान की त्रिवेणी का अटूट संबंध है। यदि तीनों में से एक भी कम है तो सदा अपूर्ण, अविकसित व अधकचरा ही रह जाएगी, संस्कृति नष्ट तो मातृभाषा नष्ट, भाषा नहीं तो ज्ञान नहीं, ज्ञान मातृभाषा व संस्कृति के बिना नहीं है।

मातृभाषा मां के गर्भ से शुरू होकर परिवार, आस पड़ोस, प्रदेश राष्ट्र व अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक ज्ञानार्जन का माध्यम बन जाती है। आदि मानव की तुलना आज के मानव से की जाए तो स्पष्ट तौर पर मातृभाषा में बोलकर ही ज्ञानार्जन किया और ज्ञानार्जन से विकास का मार्ग तय किया और ज्यों ज्यों में परिवर्तन हो रहा है। व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं की एक परिवेश से दूसरे परिवेश में मातष्भाषा के माध्यम से ही हो रहा है।

आज तृतीय विश्व युद्ध के कगार पर खड़े विश्व में विचारों के आदान प्रदान से ही हल व समाधान संभव है उसके लिए एक दूसरे के सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाना आवश्यक है और ये कार्य मातृभाषा ही बखूबी कर सकती है जोकि एक दूसरे से सांस्कृतिक मूल्यों को जीवित रखने, एक दूसरे की संस्कृति का सम्मान करने, संस्कृति ग्रहण करने से ही हो सकता है और यह सब मातृभाषा से ही हो सकता है।

अत में शंभूनाथ की कविता से मातृभाषा का महत्व स्पष्ट हो जाता है।

हिंदी मेरी भाषा है
हिंदी मेरी आशा है
हिंदी का उत्थान करना
यही मेरी जिज्ञासा है।
हिंदी की बोली अनमोल
एक शब्द के कई विलोम
हिन्दी हिन्द हिमालय पर शोभित
हार्षित होते बोल के सोमे
मीठी बोली अद्‌भुत वाणी संग
बढती प्रेम पिपास है।
हिन्दी का उत्थान करना
यही मेरी जिज्ञासा है।

मातृभाषा—सांस्कृतिक के भारतेन्दु हरिशचंद्र की दृष्टि में भी सहायक है

''निज भाषा उन्नति अहै, सबउन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय का सूल।''

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि दुनिया में 200 देश है। जिनमें से लगभग 71 देश ऐसे है जो ब्रिटिश, डच, फ्रांसीसियों, पुर्तगालियों के गुलाम रहे है लेकिन गुलामी के बाद सभी देशों ने सबसे पहले अपनी मातृभाषा को स्थापित कराया है और सबसे पहले अपनी मातृभाषा को अपनाया है तत्पश्चात वे देश आजादी की राह पर इतने आगे बढ़े की तेजी से दुनिया में स्थापित हुए। चीन का उदाहरण है जो 1949 में स्वतंत्र हुआ है अपनी मातृभाषा व संस्कृति को विकसित किया आज सम्पूर्ण विश्व चीन का लोहा मानता है क्योंकि मातृभाषा के माध्यम से चीनी भाषा ने सांस्कृतिक आदान प्रदान को ज्ञानार्जन का माध्यम बनाया। जापान जब डच के पंजों की

गुलामी से निकला तो उसने अपनी मातृभाषा को ज्ञानार्जन और सांस्कृतिक आदान प्रदान का माध्यम बनाया तो विश्व मे ंजापान का नाम अग्रणी राष्ट्रों में है। जापान ने अपनी मातृभाषा को राष्ट्र भाषा का सम्मान दिया और हर क्षेत्र में जापानी को अपनाया, शिक्षा का माध्यम बनाया जो ज्ञानार्जन व संस्कृति के आदान प्रदान का माध्यम बनी।

ब्राजील भी इसका एक उदारहण है जो अपनी मातृभाषा के माध्यम से ताकतवार होकर उभरा है। इसके अतिरिक्त फिनलैंड, डैनमार्क, नार्वे व स्वीडन आदि ने अपनी मातृभाषा के विकास से ही पूरी दुनिया में ज्ञानार्जन किया।

जहाँ तक भारत की बात है संविधान की 22 भाषाओं में से भारत किसी भी भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार नहीं कर पाया। हिन्दी भी केवल राज भाषा तक सीमित रह गई। यदि हिन्दी को मातृभाषा के रूप में स्वीकृति दी जाये तो निश्चत तौर पर मातृभाषा के रूप में हिन्दी सांस्कृतिक आदान प्रदान में विश्व में अग्रणी होगी।

सन्दर्भ

1. *मातृभाषा* (अतुल कोठारी), सरस्वती बालमन्दिर, नारायण विहार, नई दिल्ली
2. *बागडी लोकगीतों का संकलन एव विश्लेषण* (डॉ० फूल सिंह), हिन्दी विभाग पत्राचार पाठ्यक्रम निदेशालयए कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र 2007–2008
3. *शोध दिशा* (डॉ० गिरिराज शरण अग्रवाल, डॉ० मीना अग्रवाल), हिन्दी साहित्य निकेतन, साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०)